अपूर्ण अभिलेखों से खाते

11

अब तक हमने व्यावसायिक फर्मों के लेखांकन प्रलेखों का अध्ययन किया है जो कि पुस्त-पालन की द्विप्रविष्टि प्रणाली को अपनाते हैं। इससे हमें यह अनुभव होता है कि सभी व्यावसायिक इकाइयाँ इस प्रणाली को अपनाती हैं। हालाँकि व्यवहार में, सभी फर्म लेखांकन अभिलेखों को द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार नहीं रखती हैं। बहुत से छोटे-छोटे उद्यम अपने लेन-देनों के अभिलेखों को आंशिक रूप से ही रखते हैं। लेकिन वर्ष के अंत में फर्म के लिए लाभ अथवा हानि को ज्ञात करना तथा वित्तीय स्थिति को आंकना आवश्यक है। यह अध्याय अपूर्ण प्रलेखों से फर्म की वित्तीय स्थिति और लाभ-हानि के निर्धारण से संबंधित है।

अध्ययन की सामग्री

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत आप:

- अपूर्ण अभिलेखों का अर्थ एवं विषेशताएं बता सकेंगे;
- अवस्था विवरण द्वारा लाभ-हानि की गणना कर सकेंगे;
- अवस्था विवरण व तुलन-पत्र में अन्तर कर सकेंगे;
- अपूर्ण खातों से व्यापारिक लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र तैयार कर सकेंगे;
- संबधित खातों को बनाकर अनुपलब्ध डाटा तथ्यों सूचनाओं को ज्ञात कर सकेंगे।

11.1 अपूर्ण अभिलेखों का अर्थ

लेखांकन अभिलेख जो कि द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार नहीं बनाए जाते अपूर्ण अभिलेख कहलाते हैं। यद्यपि कुछ लोग इसे एकल प्रविष्टि प्रणाली भी कहते हैं। हालाँकि एकल प्रविष्टि प्रणाली एक मिथ्या प्रणाली है क्योंकि इस प्रकार लेखांकन अभिलेख तैयार करने की कोई प्रणाली नहीं होती है, तथा द्विप्रविष्टि प्रणाली की यह कोई वैकल्पिक अथवा संक्षिप्त विधि भी नहीं है। यह अभिलेखों के रख-रखाव की एक ऐसी कार्यविधि है जिसके अन्तर्गत कुछ लेन-देनों का अभिलेखन उपयुक्त *नाम* एवं *जमा* मदों से किया जाता है, जबकि कुछ अन्य लेन-देनों के अभिलेखन के लिये एक अथवा कोई भी प्रविष्टि नहीं की जाती है। समान्यतः इस प्रणाली के अन्तर्गत रोकड़ और देनदारों एवं लेनदारों के व्यक्तिगत खातों का अभिलेख तैयार किया जाता है। परिसंपत्तियों, देयताओं, व्ययों और आगमों से संबंधित अन्य सूचनाओं को आंशिक रूप से अभिलेखित किया जाता है। अतः इन्हें सामान्य तौर पर अपूर्ण अभिलेख कहते हैं।

© NCERT not to be republished

11.1.1 अपूर्ण अभिलेखों की विशेषताएं

लेन-देनों को आशिक रूप से अभिलेखित करने के कारण लेख अपूर्ण होते हैं जैसे कि छोटे दुकानदार या ठेलेवाले और सड़क पर माल विक्रय करने वाले आदि, इस प्रकार के उदाहरण में आते हैं। बड़े पैमाने के संगठनों के संदर्भ में लेखांकन अभिलेखों की अपूर्णता की स्थिति विभिन्न कारणों से उत्पन्न होती है, जैसे प्राकृतिक आपदा, अगजनी, चोरी, आदि। अपूर्ण लेखों कि विशेषताएं निम्न हैं:

(क) यह सौदों को अभिलेखित करने की विधिवत प्रक्रिया नहीं है।

(ख) सामान्यतया नकद लेन-देनों और व्यक्तिगत खाते विधिवत रखे जाते हैं, और आगम और अधिलाभों, व्ययों और हानियों, परिसम्पतियों एवं दायित्व से संबंधित सूचनाएँ नहीं रखी जाती हैं।

(ग) रोकड़ पुस्तक में स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों को दर्शाया जा सकता है।

(घ) विभिन्न सस्थाएं अपनी सुविधा व अवश्यकताओं के अनुसार अभिलेखों को रखती हैं और एकरूपता का आभाव होने के कारण ऐसे लेखे तुलनीय नहीं होते हैं।

(ड.) लाभ अथवा हानि की गणना अथवा किसी अन्य सूचना को प्राप्त करने के लिये आवश्यक आंकड़े केवल मौलिक प्रमाणकों से ही उपलब्ध किये जा सकते हैं, जैसे विक्रय बीजक, क्रय बीजक आदि। अत: मौलिक प्रमाणकों पर निर्भरता अपरिहार्य है।

(च) इस प्रणाली के अंन्तर्गत लाभ अथवा हानि की गणना उच्चस्तरीय शुद्धता से नहीं हो पाती है। क्योंकि उपलब्ध लेखों से लाभ अथवा हानि का अनुमान ही लगाया जा सकता है। तुलन-पत्र भी परिसम्पत्तियों एवं देयताओं की पूर्ण एवं सही स्थिति को नहीं दर्शाता है।

11.2 अपूर्णता के कारण और सीमायें

व्यवहार में अक्सर यह देखा गया है। कि निम्नलिखित कारणों से व्यापारी अपूर्ण लेखे रखते हैं:

(क) लेखांकन सिद्धांतों के ज्ञान के आभाव में ये यह प्रणाली व्यक्तियों द्वारा अपनाई जाती है।

(ख) यह प्रलेखों के रख रखाव की मितव्ययी विधि है। इसकी लागत कम होती है क्योंकि सस्थाओं द्वारा विशिष्ट लेखापालों की नियुक्ति नहीं की जाती है।

(ग) प्रलेखों के रख-रखाव के लिये कम समय लगता है क्योंकि केवल कुछ पुस्तकें बनाई जाती हैं।

(घ) यह प्रलेखों के रख-रखाव की सरल विधि है क्योंकि व्यपार के स्वामी द्वारा केवल आवश्यक सौदों को अभिलेखन किया जाता है।

लेखांकन प्रलेखों की अपूर्णता की अनेक सीमायें हैं यह विस्तृत रूप से कहा जा सकता है कि जब तक एक सुचारू व्यवस्था द्वारा प्रलेखों का रख-रखाव नहीं किया जाता है तब तक विश्वसनीय वित्तीय विवरण तैयार नहीं किये जा सकते हैं। संक्षिप्त रूप में अपूर्ण लेखों की सीमायें निम्नलिखित हैं:

(क) चूँकि द्वि-प्रविष्टि प्रणाली का पालन नहीं होता है इसलिए गणितीय शुद्धता की जाँच नहीं हो पाती है। ऐसी स्थिति में तलपट तैयार नहीं किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

(ख) व्यावसायिक क्रियाकलापों के वित्तीय परिणामों का मूल्यांकन और सही निर्धारण नहीं हो पाता है।

(ग) व्यवसाय की लाभप्रदता, तरलता और शुद्धीश्मता का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। इस कारण से बाहरी स्रोतों से कोषों की व्यवस्था भावी व्यावसायिक क्रियाओं के नियोजन में समस्या उत्पन्न होती है।

(घ) चोरी अथवा आगजनी के कारण स्टॉक में हानि की स्थिति में स्वामियों द्वारा बीमा कम्पनी से दावा करने में कठिनाई आती है।

(ड.) गणना की गई आय की विश्वसनीयता के लिये आयकर अधिकारियों को संन्तुष्ट करना कठिन हो जाता है।

11.3 लाभ व हानि का निर्धारण

किसी भी व्यवसाय की असफलता, सफलता और कार्य कुशलता का मूल्यांकन करने के लिए व्यावसायिक क्रियाओं के परिणामों को जानना अत्यावश्यक है इससे वित्तीय विवरणों को तैयार करने की आवश्यकता को बल मिलता है, जिससे निम्नांकित तथ्यों को उद्धृत किया जा सकता है:

(क) एक निश्चित अवधि के दौरान अर्जित लाभ या हानि।

(ख) लेखांकन अवधि में अंतिम तिथि को परिसंपत्तियों एवं देयताओं की राशि को दर्शाना।

अत: इस परिस्थिति में एक लेखांकन वर्ष के लिए लाभ अथवा हानि की गणना कैसे की जाए तथा व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति का निर्धारण उस वर्ष के अंत में कैसे किया जाए, इस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस समस्या को दो प्रकार से सुलझाया जा सकता है:

1. व्यापारिक और लाभ व हानि खाता तथा तुलन-पत्र तैयार कर लेखांकन प्रलेखों को उचित क्रम में रखना।
2. लेखांकन वर्ष के अंत तथा प्रारंभ में अवस्था विवरण तैयार करना।

11.3.1 अवस्था विवरण का निर्माण

इस विधि के अंतर्गत परिसंपत्तियाँ एवं देयताओं का विवरण तत्संबंधित लेखांकन वर्ष के प्रारम्भ एवं अंत में बनाया जाता है ताकि अवधि के अंत में पूँजी में परिवर्तन ज्ञात किया जा सके। इसको अवस्था विवरण कहते हैं क्योंकि यह एक तरफ परिसंपत्तियों को तथा दूसरी और देयताओं को दर्शाता है जैसा की तुलन-पत्र में होता है। दोनों पक्षों के योग के अंतर को पूँजी कहते हैं। (देखिये चित्र 11.1)

यद्यपि अवस्था विवरण तुलन-पत्र के समतुल्य होता है किन्तु यह तुलन-पत्र नहीं है क्योंकि डाटा पूर्ण रूप से खाता शेष पर आधारित नहीं होते हैं। स्थायी परिसंपत्तियों, बकाया व्यय, बैंक शेष आदि मदों की राशि का निर्धारण प्रासंगिक दस्तावेजों और मौलिक गणना के आधार पर की जाती है।

© NCERT not to be republished

------ तिथि को अवस्था विवरण

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (रु.)*
देय विपत्र		भूमि व भवन	
लेनदार		मशीनरी	
बकाया व्यय		फर्नीचर	
पूँजी (शेष राशि)*		स्टॉक	
		देनदार	
		रोकड़ व बैंक	
		पूँजी (शेष राशि)*	

नोट: *जब दायित्व का जोड़, परिसम्पत्तियों के जोड़ से अधिक होगा, पूँजी का परिसम्पत्तियों में दिखाया जायेगा व यह पूँजी के नाम शेष को प्रदर्शित करेगा

चित्र 11.1: *अवस्था विवरण का प्रारूप*

अवस्था विवरण की सहायता से आरंभिक एवं अंतिम पूँजी के निर्धारण के पश्चात वर्ष के दौरान उचित लाभ अथवा हानि की गणना के लिये लाभ-हानि विवरण तैयार किया जाता है। पूँजी में, दो बिन्दुओं का अंतर अर्थात प्रारंभिक एवं अंतिम स्वामित्व पूँजी, यह प्रदर्शित करती है कि अभिवृद्धि या कमी स्वामी द्वारा आहरण के माध्यम से समायेजित की गई है अथवा स्वामी द्वारा लेखांकन वर्ष के दौरान व्यापारिक क्रियाओं के कारण नई पूँजी लगाई गई है।

लाभ व हानि विवरण निम्न प्रकार तैयार किया जाता है।

समाप्त होने वाले वर्ष के अन्त में लाभ व हानि विवरण

	विवरण	*राशि (रु.)*
	वर्ष के अन्त में पूँजी (अवस्था विवरण से वर्ष के अन्त में गणना)	
जोड़ा	वर्ष के दौरान आहरण	
घटाया	वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूजी लगाना	
	वर्ष के अन्त में समायोजित पूँजी	
घटाया	वर्ष के आरम्भ में पूँजी (अवस्था विवरण से वर्ष के आरम्भ में गणना)	
	वर्ष दौरान लाभ अथवा हानि	

चित्र 11.2: *लाभ-हानि विवरण का प्रारूप*

यदि शेष सकारात्मक है तो वर्ष के दौरान अर्जित लाभ को प्रदर्शित करेगा लेकिन नकारात्मक शेष होने पर यह फर्म की हानि को इंगित करेगा। इसे लेखांकन समीकरण के रूप में इस प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं:

लाभ आथवा हानि = अंतिम पूँजी – आरंभिक पूँजी + वर्ष के दौरान आहरण – वर्ष के दौरान लगाई पूँजी

© NCERT not to be republished

उदाहरण के लिये निम्न सूचनायें जो शितू के प्रलेखों से ली गई है:

	रु.
वर्ष के आरम्भ में पूँजी 01 अप्रैल, 2004	1,20,000
वर्ष के अंत में पूँजी 31 मार्च, 2005	2,00,000
वर्ष के दौरान लाई गई पूँजी	50,000
वर्ष के दौरान एक स्वामी द्वारा पूँजी का आहरण	30,000

वर्ष के लाभ की गणना निम्न प्रकार की जायेगी:

दी गई अवधि में कमाये गये लाभ अथवा हानि की गणना इस प्रकार की जायेगी:

	विवरण	*राशि (रु.)*
	31 मार्च 2005 को पूँजी	2,00,000
जोड़ा	वर्ष के दौरान आहरण	30,000
		2,30,000
घटाया	वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी	(50,000)
	31 मार्च 2005 को समायोजित अंतिम पूँजी	1,80,000
घटाया	01 अप्रैल 2004 वर्ष के आरम्भ में पूँजी	(1,20,000)
	वर्ष के दौरान लाभ	60,000

उदाहरण 1

श्री मेहता ने 01 अप्रैल 2004 को 50,000 रुपये की पूँजी लगाकर तैयार वस्त्र का व्यापार आरम्भ किया तथा अपनी पुस्तकों को द्विप्रविष्टि प्रणाली के अंतर्गत नहीं रखा। वर्ष के दौरान 15,000 रूपये की अतिरिक्त पूँजी व्यापार में निवेश की गई । अपने निजी उपयोग के लिए 10,000 रु. का आहरण किया। 31 मार्च 2005 को उसकी स्थिति निम्न प्रकार है।

कुल लेनदार 90,000 रु.; कुल देनदार 1,25,600 रु.; रहतियां 24,750 रु.; बैंक रोकड़ 24,980 रु. अवस्था विवरण विधि के द्वारा श्री मेहता के व्यापार का वर्ष के दौरान लाभ अथवा हानि की गणना करें

हल

श्री मेहता की पुस्तक

31 मार्च 2005 को अवस्था विवरण

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसम्पत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
लेनदार	90,000	बैंक में रोकड़	24,980
पूँजी	85,330	देनदार	1,25,600
(शेष राशि)		स्टॉक	24,750
	1,75,330		1,75,330

© NCERT not to be republished

31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ अथवा हानि का विवरण

	विवरण	*राशि (रु.)*
	31 मार्च 2005 को पूँजी	85,330
जोड़ा	वर्ष के दौरान आहरण	10,000
		95,330
घटाया	वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी का निवेश	(15,000)
	31 मार्च 2005 को वर्ष को अन्त में समायोजित पूँजी	80,330
घटाया	01 अप्रैल 2004 को वर्ष के आरंभ में पूँजी	(50,000)
	वर्ष के दौरान लाभ	30,330

उदाहरण 2

श्रीमती वन्दना एक छोटी छपाई प्रेस चलाती है। वह केवल वही अभिलेख तैयार करती है जो व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है। 1 अप्रैल 2004 को उनकी परिसंपत्तियों तथा देयताओं संबंधी सूचनाएँ इस प्रकार थीं:

छपाई प्रेस 5,00,000 रु., भवन 2,00,000 रु. स्टॉक 50,000 रु., बैंकस्थ रोकड़ 65,600 रु., हस्तस्थ रोकड़ 7,980 रु., ग्राहकों से देय राशि 20,350 रु., लेनदारों का देय राशि 75,340 रु. बकाया मजदूरी 5,000 रु. व्यक्तिगत व्ययों की पूर्ति हेतु वह प्रतिमाह 8,000 रु. आहरित करती है, लेखा वर्ष के दौरान उनके द्वारा 15,000 रु. के अतिरिक्त पूँजी लगाई। 31 मार्च 2005 को उनकी स्थिति इस प्रकार थी।

प्रैस 5,25,000 रु., भवन 2,00,000 रु., स्टॉक 55,000 रु., बैंकस्थ रोकड़ 40,380 रु., हस्तस्थ रोकड़ 15,340, ग्राहकों से देय राशि 17,210 रु., लेनदारों को देय राशि 65,680 रु.।

हल

श्रीमती बंदना की पुस्तकें

1 अप्रैल 2004 को व 31 मार्च 2005 को अवस्था विवरण

दायित्व	*01 अप्रैल 2004*	*31 मार्च 2005*	*संपत्तियाँ*	*1 अप्रैल 2004*	*31 मार्च 2005*
लेनदार	75,340	65,680	छापाई प्रेस	5,00,000	5,25,000
बकाया मजदूरी	5,000	–	भवन	2,00,000	2,00,000
पूँजी (शेष राशि)	7,63,590	7,87,250	देनदार	20,350	17,210
			स्टॉक	50,000	55,000
			बैंक में रोकड़	65,600	40,320
			हस्तस्थ रोकड़	7,980	15,540
	8,52,930	8,52,930		8,52,930	8,52,930

© NCERT not to be republished

31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये लाभ व हानि का विवरण

	विवरण	*राशि (रु.)*
	31 मार्च 2005 को पूँजी	7,87,250
जोड़ा	वर्ष के दौरान आहरण	96,000
		8,83,250
घटाया	वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी	(15,000)
	वर्ष के अन्त में समायोजित पूंजी (31 मार्च 2005)	8,68,250
घटाया	01 अप्रैल 2004 को पूँजी	(7,63,590)
	वर्ष के दौरान लाभ	1,04,660

11.3.2 अवस्था विवरण एवं तुलन-पत्र में अन्तर

अवस्था विवरण एवं तुलन-पत्र दोनों किसी एक तिथि को एक व्यावसायिक इकाई की परिसंपत्तियों एवं देयताओं को दर्शाती है। हालांकि दोनों में कुछ आधार भूत अन्तर है। अवस्था विवरण अपूर्ण अभिलेखों की सहायता से तैयार होता है जिनमें अधिकांश परिसंपत्तियों का अभिलेखन अनुमान पर आधारित होता है। जबकि तुलन-पत्र द्वि-अंकन प्रणाली के आधार पर तैयार अभिलेखों से तैयार किया जाता है तथा सभी परिसंपत्तियों की सत्यता की खाता बही से जांच की जा सकती है। इसीलिए तुलन-पत्र अवस्था विवरण की तुलना में अधिक विश्वसनीय है। अवस्था विवरण बनाने का उद्देश्य किसी एक तिथि को पूँजी खाते का शेष जानना है। जबकि तुलन-पत्र एक विशेष तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को जानने के लिए बनाया जाता है। एक अवस्था विवरण में परिसंपत्ति अथवा देयता की कोई मद छूट सकती है इसका ज्ञान भी नहीं होगा क्योंकि इसके प्रभाव का पूँजी के शेष में समायोजन हो जाएगा तथा अवस्था विवरण के दोनों ओर के जोड़ो का मिलान हो जाएगा। हालांकि तुलन-पत्र में किसी मद के छूट जाने की संभावना बहुत कम होती है क्योंकि ऐसा होने पर तुलन-पत्र का मिलान नहीं होगा तथा लेखाकार लेखांकन अभिलेखों से छूट गई मद को ढूँढ निकालेगा।

इन अन्तरों को नीचे दी गई सारणी में दर्शाया गया है:

अन्तर का आधार	*अवस्था विवरण*	*तुलन-पत्र*
विश्वसनीयता	यह कम विश्वसनीय है क्योंकि इसे अपूर्ण प्रलेखों से बनाया जाता है।	यह अधिक विश्वसनीय है क्योंकि इसे द्विअंकन विधि द्वारा तैयार किया जाता है।
उद्देश्य	अवस्था विवरण बनाने का उद्देश्य किसी तिथि विशेष को पूँजी शेष का अनुमान लगाना है।	यह किसी तिथि विशेष को इकाई की सत्य वित्तीय स्थिति को दर्शाता है।
छूटी गई मदें	परिसंपत्तियों अथवा देयताओं से संबंधित छूटी गई मदों को ढूंढना जटिल होता है।	परिसंपत्तियों और देयताओं से संबंधित छूटी गई मदों को सरलता से ढूढ़ा जा सकता है।

चित्र 11.3: *अवस्था विवरण और तुलन-पत्र की तुलना*

© NCERT not to be republished

स्वयं करें

अपने क्षेत्र के किसी छोटे दुकानदार को ढूँढें तथा उसके द्वारा लेखांकन अभिलेखों के संबंध में पूछें, यदि वह इन अभिलेखों को द्विअंकन प्रणाली से नहीं रख रहा है तो इसके कारण जानकार सूचिबद्ध करें तथा उससे पूछें कि वह लाभ-हानि की गणना किस प्रकार से करता है।

11.4 व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा तुलन-पत्र तैयार करना

व्यापारिक और लाभ व हानि खाता तथा तुलन-पत्र बनाने के लिए व्यय, आय, परिसंपत्तियों एवं देयताओं की पूरी सूचना की आवश्यकता होती है। अधूरे अभिलखों में लेनदार, नकद क्रय, देनदार, नकद विक्रय, अन्य नकद भुगतान एवं नकद प्राप्ति आदि कुछ मदों का विस्तृत ब्योरा सरलता से प्राप्त हो जाता है। लेकिन कुछ मदें ऐसी भी हैं जिनका निर्धारण परोक्ष रूप से द्वि-अंकीय तर्क पर किया जाता है। वे अधिकांश साधारण मदें जो छूट गई हैं अथवा जिन्हें ज्ञात करना है, निम्न हैं:

- आरम्भिक पूँजी
- उधार क्रय
- उधार विक्रय
- देय विपत्र
- प्राप्त प्राप्य विपत्र
- लेनदारों को भुगतान
- देनदारों को भुगतान
- अन्य कोई रोकड़/बैंक संबंधित भेद

आप जानते है कि अरंम्भिक पूँजी को वर्ष के प्रारम्भ अवस्था विवरण तैयार कर ज्ञात किया जा सकता है। आगे हमने समझाया है कि हम कुल देनदार एवं कुल लेनदार, कुल प्राप्य बिल एवं कुल देय बिल खातों एवं रोकड़ बही सारांश की मदद से अनुपलब्ध राशियों का निर्धारण किया जा सकता है।

11.4.1 उधार क्रय निर्धारण

अपूर्ण अभिलेखों में समान्यता उधार क्रय के डाटा नहीं होते हैं। यह भी संभव है कि लेनदारों से संबंधित कुछ अन्य सूचनाएँ भी अनुपलब्ध हैं अत: कुल लेनदार खाता बनाने पर (जिसे चित्र सं. 11.4 में दर्शाया गया है) उधार क्रय या लेनदारों से संबंधित अन्य अनुपलब्ध डाटों का शेष के रूप में निर्धारण किया जाता सकता है।

© NCERT not to be republished

कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	रोकड़ भुगतान बैंक (चैक दिये) देय विपत्र (स्वीकृत विपत्र) प्राप्त बट्टा क्रय वापसी शेष आ/ले				आरम्भिक शेष बैंक (अनादृत रोकड़) देय विपत्र (अनादृत विपत्र) उधार क्रय		

चित्र 11.4: *लेनदार खाते का प्रारूप*

उदाहरण के लिये निम्न लेन-देन किसान फूड सप्लाई से संबंधित है:

	रु.
लेनदारों का आरंभिक शेष	40,000
लेनदारों का अंतिम शेष	50,000
रोकड़ का भुगतान	85,000
प्राप्त बट्टा	2,000

कुल लेनदार खाता निम्न प्रकार बनाया जायेगा:

किशन फूड सप्लाई की पुस्तकें

कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	रोकड़ बट्टा अंतिम शेष		85,000 2,000 50,000		आरम्भिक शेष उधार क्रय (शेष राशि)		40,000 97,000
			1,37,000				1,37,000

11.4.2 उधार विक्रय का निर्धारण

अपूर्ण अभिलेखों में उधार विक्रय आंकड़े उपलब्ध नहीं होते हैं। देनदारों से संबंधित कुछ अन्य सूचनायें अनुपलब्ध हो सकती हैं। अतः कुल देनदार खाता बनाने पर (जिसे चित्र 11.5 में दर्शाया गया है) उधार विक्रय को अन्य अनुपलब्ध आंकड़ों की शेष के रूप में गणना की जा सकती है।

© NCERT not to be republished

कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	शेष आ/ला प्राप्य विपत्र (अनादृत) बैंक (चैक अनादृत) उधार विक्रय (शेष राशि)				रोकड़ (प्राप्त रोकड़) बैक (प्राप्त चैक) बट्टा दिया डूबत ऋण प्राप्य विपत्र (प्राप्त विपत्र) शेष आ/ले		

प्रदर्श 11.5: *देनदार खाते के प्रारूप*

निवल उधार विक्रय की गणना कुल उधार विक्रय में से विक्रय वापसी की राशि को घटाकर की जाती है। उदाहरण के लिये निम्न सूचनायें मोहन लाल टैडर्स की पुस्तकों से ली गई है:

	रु.
01 अप्रैल 2005 की देनदार	50,000
31 मार्च 2006 को देनदार	70,000
देनदारों से प्राप्त धनधारी	60,000
प्रदत्त बट्टा	1,000
प्राप्य विपत्र	30,000
डूबत ऋण	3,000

कुल देनदार खाता निम्न प्रकार बनाया जायेगा:

मोहन लाल टेडर्स

कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
2005	शेष आ/ला		50,000		रोकड़		60,000
अप्रैल 01	उधार विक्रय		1,14,000		बट्टा		1,000
	(शेष राशि)				प्राप्य विपत्र		30,000
					अशोध्य ऋण		3,000
					शेष आ/ले		70,000
			1,64,000				1,64,000

© NCERT not to be republished

11.4.3 प्राप्य विपत्र व देय विपत्र का निर्धारण

कई बार प्राप्य विपत्र और देय विपत्रों से सम्बंधित विस्तृत विवरण उपलब्ध होते हैं। किन्तु वर्ष भर में प्राप्त एवं स्वीकृत विपत्रों के आकड़े अनुपलब्ध होते हैं, ऐसी स्थिति में कुल प्राप्त विपत्र खाता और देय विपत्र खाता तैयार करके शेष के रूप में अनुपलब्ध आकड़ों की गणना की जा सकती है कुल प्राप्य विपत्र खाता और कुल देय विपत्र खाते का प्रारूप चित्र संख्या 11.6 और 11.7 में दर्शाया गया है।

कुल प्राप्य विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
तिथि	शेष आ/ला विवध देनदार (विपत्र प्राप्त)				बैंक विविध देनदार (आनदृत विपत्र) अंतिम शेष आ/ले		

प्रदर्श 11.6: *प्राप्य विपत्र खाते का प्रारूप*

कुल देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
	बैंक (विपत्र परिपक्य) विविध लेनदार (आनदृत विपत्र) शेष आ/ले				शेष आ/ला विवध लेनदार (विपत्र स्वीकृत)		

प्रदर्श 11.7: *देय विपत्र का प्रारूप*

उदाहरण के लिए निम्नलिखित आंकड़े मै. एस. एस सेनापति की पुस्तकों से प्राप्त किये गये हैं:

	रुपये
आरंभिक प्राप्य विपत्र	5,000
आरंभिक देय विपत्र	37,000
प्राप्य विपत्र अनादृत	2,000
देय विपत्र अनादृत	66,750
अंतिम देय विपत्र	52,000
वर्ष के दौरान संग्रहित विपत्र	12,000
अंतिम प्राप्य विपत्र	4,000

© NCERT not to be republished

प्राप्य विपत्र खाता व देय विपत्र खाता इस प्रकार बनाया जायेगा:

कुल प्राप्य विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		5,000		विविध देनदार (विपत्र अनादृत)		2,000
	विविध देनदार (विक्रय प्राप्त) (शेष राशि)		13,000		बैंक विपत्र संग्रहित		12,000
					शेष आ/ले		4,000
			18,000				18,000

कुल देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
	विपत्र अनादृत		66,750		शेष आ/ले		37,500
	शेष आ/ले		52,500		विविध लेनदार (विपत्र स्वीकृत) (शेष राशि)		81,750
			1,19,250				1,19,250

स्वयं जाँचिये - 1

सही उत्तर पर निशान लगायें:

1. अपूर्ण अभिलेखन विधि पुस्त-पालन:
   (क) वैज्ञानिक है (ख) अवैज्ञानिक है
   (ग) अव्यवस्थित है (घ) दोनों (ख) और (ग) हैं
2. आरम्भिक पूँजी का निर्धारण खाता बना कर होता है:
   (क) कुल देनदार खाता (ख) कुल लेनदार खाता
   (ग) रोकड़ खाता (घ) आरंम्भिक अवस्था विवरण
3. वर्ष के दौरान उधार क्रय की गणना किस खाते को बना कर की जाती है:
   (क) कुल लेनदार खाता (ख) कुल देनदार खाता
   (ग) रोकड़ खाता (घ) आरंभिक अवस्था विवरण
4. यदि आरम्भिक पूँजी 60.000 रूपये, आहरण 5,000 रूपये, सत्र के अतिरिक्त पूँजी 10,000 रुपये, अंतिम पूँजी 90,000 रूपये है तो वर्ष के दौरान कमाया गया लाभ होगा:
   (क) 20,000 रुपये (ख) 25,000 रुपये
   (ग) 30,000 रुपये (घ) 40,000 रूपये

© NCERT not to be republished

11.4.4 रोकड़ पुस्तक के सारांश द्वारा अनुपलब्ध सूचनाओं का निर्धारण

कभी–कभी लेनदारों को भुगतान की गई राशि या देनदारों से प्राप्त राशि या रोकड़ का आरंम्भिक अथवा अंतिम शेष अथवा बैंक शेष अनुपलब्ध हो सकता है। प्राप्ति तथा भुगतान संबंधी अनुपलब्ध मदों का निर्धारण हम रोकड़ पुस्तक के संरांश जो कि वर्ष के दौरान सभी प्राप्ति एवं भुगतान की मदों की शेष राशि को दर्शाता है, कर सकते हैं।

यद्यपि लेनदारों को भुगतान और देनदारों से प्राप्त दोनों राशि अनुपलब्ध हैं तब ऐसी स्थिति में लेनदार अथवा देनदार खाता तैयार कर लुप्त राशियों का निर्धारण किया जा सकता है। जैसा की पहले बताया जा चुका है, अन्य अनुपलब्ध राशियों का निर्धारण रोकड़ पुस्तक सारांश के द्वारा किया जा सकता है।
अनुपलब्ध सूचना प्राप्त हो जाने के बाद अंतिम खातों को सीधे तैयार किया जा सकता है अथवा तलपट बनाने के पश्चात किया जा सकता है। तलपट के विभिन्न अवयवों और उनके सूचना स्रोतों का सारांश नीचे दिया गया है:

1.	अंतिम परिसंपत्तियाँ (स्टाक के अतिरिक्त) और दायित्व	अंतिम सूची से
2.	आरंभिक परिसंपत्तियाँ (जिसके आरम्भिक	स्टॉक भी सम्मलित है) और दायित्व आरंभिक सूची से
3.	क्रय	कुल लेनदार खातों से उधार क्रय और रोकड़ पुस्तक सारांश से नकद क्रय और रोकड़ सारांश से नकद क्रय से
4.	विक्रय	कुल देनदार खातों से उधार विक्रय और रोकड़ पुस्तक सारांश से नकद विक्रय से
5.	आरम्भिक पूँजी	आरम्भिक अवस्था विवरण से
6.	व्यय और आगम	रोकड़ सारांश के अनुसार सहायक सूचनाओं से
7.	हानियाँ और अधिलाभ	समस्त खातों तथा विखरी सूचनाओं से
8.	प्राप्त प्राप्य विपत्र	कुल प्राप्य विपत्र खातों से
9.	स्वीकृत देय विपत्र	कुल देय विपत्र खातों से
10.	रोकड़/बैंक शेष	रोकड़ पुस्तक सारांश से

प्रदर्श 11.8: *अनुपलब्ध सूचनाओं को ज्ञात करना*

© NCERT not to be republished

उदाहरण 3

निम्न सूचनाओं द्वारा 31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले के लिये श्री अमित की कुल क्रय और कुल विक्रय की गणना करें:

कुल	राशि (रु.)
10 अप्रैल 2004 को कुल देनदार	40,000
01 अप्रैल 2004 को लेनदार	50,000
01 अप्रैल 2004 को प्राप्य विपत्र	30,000
01 अप्रैल 2004 देय विपत्र	45,000
बट्टा प्राप्त	5,000
डूबत ऋण	2,000
विक्रय वापसी	4,000
बट्टा प्रदत्त	3,000
नकद विक्रय	10,000
नकद क्रय	8,000
31 मार्च 2005 को कल देनदार	80,000
देनदारों से प्राप्त राशि	25,000
लेनदारों को नकद भुगतान	80,000
प्राप्य विपत्र का भुगतान	40,000
31 मार्च 2005 को कुल लेनदार	40,000
31 मार्च 2005 को देय विपत्र	50,000
31 मार्च 2005 को प्राप्य विपत्र	35,000

हल

कुल प्राप्य विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
	शेष आ/ला		30,000		रोकड़		25,000
	कुल देनदार (शेष राशि)		30,000		शेष आ/ले		35,000
			60,000				60,000

कुल देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)
	रोकड़		40,000		शेष आ/ला		45,000
	शेष आ/ले		50,000		कुल लेनदार (शेष राशि)		45,000
			90,000				90,000

कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)
	शेष आ/ला		40,000		डूबत ऋण		2,000
	विक्रय		1,79,000		विक्रय वापसी		4,000
	(शेष राशि)				प्रदत्त बट्टा		3,000
					रोकड़		1,00,000
					प्राप्य विपत्र		30,000
					शेष आ/ले		80,000
			2,19,000				2,19,000

कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि (रु.)
	प्राप्त बट्टा		5,000		शेष आ/ले		50,000
	रोकड़		80,000		(क्रय उधार)		1,20,000
	देय विपत्र (खाते से हस्तांतरित)		45,000		(शेष राशि)		
	शेष आ/ले		40,000				
			1,70,000				1,70,000

टिप्पणी (कार्यवाही)

(1) उधार क्रय की गणना कुल लेनदार खाते से 1,20,000 रु. की गई है। नकद खरीद 8,000 रु. दी गई है। कुल खरीद 1,20,000 रु. + 8,000 रु. = 1,28,000 रु. होगी।

(2) उधार विक्रय की गणना कुल देनदार खाते से 1,79,000 रु. की गई है। नकद विक्रय 10,000 रु. दिया गया है। कुल विक्रय 1,79,000 रु. + 10,000 रु. = 1,89,000 रु.

© NCERT not to be republished

उदाहरण 4

सुधा से प्राप्त सूचनाओं के द्वारा शुद्ध विक्रय की गणना करें:	रुपये
1 अप्रैल 2005 को देनदार	65,000
31 मार्च 2006 को देनदार	50,000
1 अप्रैल 2005 को प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष	23,000
31 मार्च को प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष	29,000
विपत्र का अन्तिम शेष देनदारों से नकद प्राप्ती	3,02,000
प्रदत्त बट्टा	8,000
प्राप्य विपत्र से नकद प्राप्ती	21,000
डूबत चरण	14,000
प्राप्य विपत्र (अनादृत)	20,000
नकद विक्रय	2,25,000
विक्रय वापसी	17,000

सुधा की पुस्तकें

कुल प्राप्य विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
2005	आरंभिक शेष		23,000		नकद (विपत्र भुगतान)		21,000
अप्रैल	देनदार		47,000		प्राप्य विपत्र (अनादृत)		20,000
01	(प्राप्त विपत्र)				अन्तिम शेष		29,000
	(शेष राशि)		70,000				70,000

कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि (रु.)*
2005	आरंभिक शेष		65,000		नकद प्राप्ती		3,02,000
अप्रैल	प्राप्य विपत्र		20,000		बट्टा प्रदत्त		8,000
01	(अनादृत)				विक्रय वापसी		17,000
	विक्रय		3,53,000		डूबत ऋण		14,000
	(शेष राशि)				प्राप्य विपत्र (प्राप्य विपत्र खाते से हस्तांतरित)		47,000
					अंतिम शेष		50,000
			4,38,000				4,38,000

© NCERT not to be republished

(कार्यवाही टिप्पणी)

शुद्ध विक्रय की गणना कुल देनदार और प्राप्य विपत्र खातों से निम्न प्रकार करेंगे:

शुद्ध विक्रय = नकद विक्रय उधार विक्रय – विक्रय वापसी

= 2,25,000 रु. + 3,53,000 रु. – 17,000 रु.

= 5,61,000 रु.

उदाहरण 5

ओमप्रकाश की लेखा पुस्तकें द्वि-अंकन बही खाता प्रणाली पर आधारित तुलन-पत्र नहीं है। 31 मार्च, 2005 को उसके प्रलेखों से उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र तैयार कीजिए। धुलाई उपकरण पर 10% की दर से ह्रास लगाएं।

रोकड़ पुस्तक का सारांश

नाम **जमा**

प्राप्तियां	*राशि (रु.)*	*भुगतान*	*राशि (रु.)*
आरंभिक शेष आ/ला	8,000	नकद क्रय	14,000
नकद विक्रय	40,000	लेनदारों को भुगतान	20,000
देनदारों से प्राप्तियाँ	30,000	विविध व्यय	6,000
		भाड़ा	2,000
		आहरण	8,000
		शेष आ/ले	28,000
	78,000		78,000

अन्य सूचनाएँ:

31 मार्च, 2005

	31 मार्च 2004	*31 मार्च 2005*
देनदार	9,000	12,000
लेनदार	14,400	6,800
सामग्री का स्टॉक	10,000	16,000
धुलाई उपकरण	40,000	40,000
फर्नीचर	3,000	3,000
वर्ष के दौरान बट्टा दिया	–	1,400
वर्ष के दौरान प्राप्त बट्टा		1,700

© NCERT not to be republished

हल

ओम प्रकाश की पुस्तकें

31 मार्च 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक और लाभ व हानि खाता

भुगतान	*राशि (रु.)*	*प्राप्तियां*	*राशि (रु.)*
आरम्भिक स्टॉक	10,000	विक्रय	74,400
क्रय	28,100	अंतिम स्टॉक	16,000
भाड़ा	2,000		
सकल आ/ले	50,300		
	90,400		90,400
विविध व्यय	6,000	सकल लाभ/ला	50,300
बट्टा दिया	1,400	प्राप्त बट्टा	1,700
ह्रास	4,000	निवल लाभ	40,600
	52,000		52,000

31 मार्च 2005 को तुलन-पत्र

दायित्व		*राशि रु.*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि रु.*
पूँजी	55,600		धुलाई उपकरण	40,000	
जोड़ा: निवल लाभ	40,600		*घटाया:* ह्रास	(4,000)	36,000
घटाया: आहरण	96,200		फर्नीचर		3,000
	(8,000)	88,200	सामग्री का स्टॉक		16,000
लेनदार		6,800	देनदार		12,000
			रोकड़		28,000
		95,000			95,000

कार्यवाही टिपण्णी:

कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	आरंभिक शेष		9,000		नकद		30,000
	विक्रय (उधार)		34,400		बट्टा दिया		1,400
					शेष आ/ले		12,000
			43,400				43,400

© NCERT not to be republished

कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	रोकड़		20,000		आरम्भिक शेष		14,400
	प्राप्त बट्टा		1,700		क्रय (उधार)		14,100
	शेष आ/ले		6,800		(शेष राशि)		
			28,500				28,500

31 मार्च 2004 को अवस्था विवरण

विवरण	राशि रु.	विवरण	राशि (रु.)
लेनदार	14,400	धुलाई उपकरण	40,000
पूंजी (शेष राशि)	55,600	फर्नीचर	3,000
		सामग्री का स्टॉक	10,000
		देनदार	9,000
		नकद	8,000
	70,000		70,000

उदाहरण 6

श्रीमति सुरभि ने 1 जनवरी 2005 को नकद 50,000 रुपये, फर्नीचर 1,000 रुपये माल 2,000 रुपये और मशीनरी 20,000 रुपये से व्यापार आरम्भ किया। वर्ष के दौरान उन्होंने अपने व्यापार में 20,000 रु. की नई पूँजी बैंक खाता खोलकर लगाई। उनकी पुस्तकों से प्राप्त सूचनाओं के आधार के आधार पर आय 31 दिसम्बर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अंतिम खाते तैयार कीजिए।

देनदारों से प्राप्तियां	57,500
नकद विक्रय	45,000
नकद क्रय	25,000
मजदूरी का भुगतान	5,000
कर्मचारियों का वेतन	17,500
व्यापारिक व्यय	6,500
कारखाने का बिजली बिल	7,500
सुरभि द्वारा आहरण	3,000
लेनदारों को भुगतान	42,000

© NCERT not to be republished

बट्टा दिया	1,200
प्राप्त बट्टा	3,000
डूबत ऋण अपलिखित	1,300
वर्ष के अन्त में नकद शेष	20,000

श्रीमति सुरभि ने 2,500 रूपये मूल्य के माल का निजी प्रयोग किया जो कि पुस्तकों में दर्ज नहीं हुआ। फरनीचर पर 10% तथा मशीनरी पर 20% प्रतिवर्ष का ह्रास लगाया।

31 दिसंबर 2005 को देनदार 70,000 और लेनदार 35,000। इस तिथि को व्यापारिक स्टॉक 25,000 रुपये है।

हल

श्रीमती सुरभि की पुस्तकें

31 दिसम्बर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक, और लाभ व हानि खाता

व्यय/हानि		*राशि (रु.)*	*आगम/अधिलाभ*		*राशि (रु.)*
आरम्भिक स्टॉक		20,000	विक्रय (नकद)		45,000
क्रय–नकद	25,000		उधार	1,30,000	1,75,000
उधार	80,000[2]				
	1,05,000		अंतिम स्टाक		25,000
घटाया: माल का निजी उपयोग	(2,500)	1,02,500			
मजदूरी		5,000			
कारखाने का बिजली बिल		7,500			
सकल लाभ आ/ले		65,000			
		2,00,000			2,00,000
वेतन		17,500	सकल लाभ आ/ला		65,000
व्यापारिक व्यय		6,500	प्राप्त बट्टा		3,000
बट्टा दिया		1,200			
अशोध्य ऋण		1,300			
ह्रास :					
फर्नीचर	1,000				
मशीन	4,000	5,000			
निवल लाभ		36,500			
पूंजी खाते में हस्तांतरित)					
		68,000			68,000

© NCERT not to be republished

31 दिसम्बर 2005 को श्रीमति सुरभि का तुलन-पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसम्पत्तियां*		*राशि (रु.)*
लेनदार		35,000	रोकड़		20,000
पूंजी	1,00,000		बैंक		13,000
जोड़ा: निवल लाभ	36,500		स्टॉक		25,000
	1,36,500		देनदार		70,000
जोड़ा: अतिरिक्त पूँजी	20,000		फर्नीचर	10,000	
	1,56,500		*घटाया:* ह्रास	(1,000)	9,000
घटाया आहरण			मशीनरी	20,000	
रोकड़ 36,000			*घटाया:* ह्रास	(4,000)	16,000
माल 2,500	(38,500)	1,18,000			
		1,53,000			1,53,000

कार्यकारी टिप्पणी:

(क) कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	शेष आ/ला		–		रोकड़		57,500
	विक्रय (उधार) (शेष राशि)		1,30,000		प्रदत्त बट्टा		1,200
					डूबत ऋण		1,300
					शेष आ/ले		70,000
			1,30,000				1,30,000

(ख) कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	रोकड़		42,000		शेष आ/ले		-
	प्राप्त बट्टा		3,000		क्रय (उधार शेष राशि)		80,000
	शेष आ/ले		35,000				
			80,000				80,000

© NCERT not to be republished

(ग) 01 जनवरी 2005 को अवस्था विवरण

विवरण	*राशि रु.*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
पूंजी (शेष राशि)	1,00,000	रोकड़	50,000
		स्टॉक	20,000
		फर्नीचर	10,000
		मशीनरी	20,000
	1,00,000		1,00,000

(घ) रोकड़ पुस्तक सारांश

प्राप्तियां	*राशि (रु.)*	*भुगतान*	*राशि (रु.)*
शेष आ/ला	50,000	क्रय	25,000
पूँजी (बैंक)	20,000	मजदूरी	5,000
देनदार	57,000	वेतन	17,500
विक्रय	45,000	व्यापारिक व्यय	6,500
		बिजली बिल	7,500
		आहरण	36,000
		लेनदार	42,000
		शेष आ/ले	20,000
		अंतिम बैंक शेष (शेष राशि)	13000
	1,72,500		1,72,500

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिये - II

स्वयं शब्द लिखें:

1. उधार विक्रय की गणना .... खाते की शेष राशि से की जाती है।
2. .... पर .... की अधिक्यता किसी समयावधि पर होने वाली हानि से है।
3. .... के लिए अंतिम पूँजी का समायोजन .... को घटाकर व .... को जोड़ पर किया जाता है।
4. अपूर्ण खातों का प्रयोग .... द्वारा किया जाता है।

उदाहरण 7

1. श्री बहादुर के अपूर्ण लेखों से अंतिम खाते तैयार करें, साथ ही देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनायें और मोटर कार 20% की दर से ह्रास लगाएँ।

(क) अप्रैल 2005 को तुलन-पत्र

दायित्व	*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि (रु.)*
पूँजी	92,500	मोटर कार	71,700
देय विपत्र	32,800	स्टॉक	51,500
लेनदार	84,200	देनदार	49,500
प्राप्य विपत्र	24,400		
हस्तस्थ रोकड़	12,400		
	2,09,500		2,09,500

(ख) वर्ष के दौरान रोकड़ लेन-देन

विवरण	*राशि रु.*	*विवरण*	*राशि (रु.)*
शेष आ/ला	12,400	फर्नीचर	30,000
देनदारों से प्राप्ति	1,15,000	मजदूरी	400
देय विपत्र	14,200	क्रय	40,500
विक्रय	1,03,000	आहरण	24,000
देय विपत्र	30,700	सामान्य व्यय	20,700
		लेनदारों को भुगतान	80,800
		शेष आ/ले	8,500
	2,44,600		2,44,600

(ग) अन्य सूचनाएं

प्राप्य विपत्र	6,300
ग्राहकों को बट्टा दिया	2,300
अपूर्तिकर्त्ता से बट्टा प्राप्त	700
उधार क्रय	29,600
अंतिम रहतिया	41,700
देनदारों का अन्तिम शेष	55,000
देय विपत्र का अंन्तिम शेष	10,200

हल

नकद विक्रय और नकद क्रय लेन-देनों से उपलब्ध होंगे। उधार क्रय की राशि भी दी गई है। उधार विक्रय की राशि देनदार खाता खोल कर ज्ञात को जाएगी। यद्यपि उधार क्रय की राशि ज्ञात है किन्तु लेनदारों का अंतिम शेष नहीं दिया गया है। इसलिए लेनदार खाता भी खोला भी जाएगा। चूँकि देय-विपत्र और प्राप्य विपत्र भी दर्शाएं गए हैं। अतः इन खातों को तैयार किये जाने पर लेनदार और देनदार खाते पूर्ण नहीं होंगे।

© NCERT not to be republished

श्री बहादुर की पुस्तकें

31 मार्च 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक और लाभ व हानि खाता

व्यय/हानि		*राशि (रु.)*	*आगम/अधिगम*		*राशि (रु.)*
अरंभिक स्टॉक		51,500	विक्रय:		
क्रय: नकद	1,03,000		नकद	40,500	
उधार	1,29,100	2,32,100	उधार	29,600	70,100
			अंतिम स्टॉक		41,700
मजदूरी		9,400			
सकल लाभ आ/ला		1,42,800			
		2,73,800			2,73,800
समान्य व्यय		20,700	सकल लाभ आ/ले		1,42,800
बट्टा प्राप्त		2,300	प्राप्त बट्टा		700
मोटर कार पर ह्रास		14,340			
संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान		2,750			
निवल लाभ		10,3410			
		143,500			1,43,500

31 मार्च 2006 को तुलन-पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियां*		*राशि (रु.)*
पूँजी	92,500		मोटर कार	71,700	
जोड़ा: निवल लाभ	1,03,410		*घटाया:* ह्रास	(14,340)	57,360
	1,95,910		फर्नीचर		30,000
घटाया: आहरण	(24,000)	1,71,910	अंतिम स्टॉक		41,700
लेनदार		24,200	देनदार	55,000	
देय विपत्र		10,200	*घटाया:* प्रावधान	(2,750)	52,250
			प्राप्य विपत्र		16,500
			रोकड़		8,500
		2,06,310			2,06,310

कार्यवाही टिप्पणी:

(क) कुल प्राप्य विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	शेष आ/ला		24,400		नकद प्राप्ति		14,200
	देनदार (विपत्र लेखे)		6,300		शेष आ/ले		16,500
			30,700				30,700

© NCERT not to be republished

(ख) कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	शेष आ/ला		49,500		नकद (प्राप्ति)		1,15,000
	उधार विक्रय		1,29,100		विपत्र लिखे		6,300
	(शेष राशि)				बट्टा दिया		2,300
					शेष आ/ले		55,000
			1,78,600				1,78,600

(ग) कुल देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	नकद (भुगतान)		30,700		शेष आ/ला		32,800
	अंतिम शेष		10,200		लेनदार (विपत्र स्वीकार्य)		8,100
	(शेष राशि)						
			40,900				40,900

(घ) कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	नकद		80,800		शेष आ/ला		84,200
	देय विपत्र		8,100		उधार क्रय		29,600
	प्राप्त बट्टा		700				
	शेष आ/ले		24,200				
	(शेष राशि)						
			1,13,800				1,13,800

उदाहरण 8

दिनेश अपने व्यापारिक खाते व्यवस्थित ढंग से नहीं रखता है। उसके द्वारा निम्न सूचनाएँ प्रदान की गई हैं–

© NCERT not to be republished

1. परिसम्पत्तियाँ एवं देयतायें

	31 दिसंबर 2005	31 दिसंबर 2006
विविध देनदार	45,000	48,600
विविध लेनदार	24,000	?
रोकड़	4,500	?
फर्नीचर एवं फिक्सचर	15,000	?
स्टॉक	25,000	?
मोटर वेन	16,000	?

2. वर्ष के दौरान लेन-देन

देनदारों से नकद प्राप्ति	80,000
देनदारों को दिया गया बट्टा	1,400
अशोध्य ऋण को अपलिखित किया	1,800
लेनदारों को नकद भुगतान	63,000
लेनदारों से प्राप्त बट्टा	1,000
विक्रय वापसी	3,000
क्रय वापसी	2,000
व्ययों का भुगतान	6,000
आहरण	5,000
किराये का भुगतान	2,500

3. अन्य सूचनाएं

बकाया व्यय 1,200 रूपये, फर्नीचर पर 10% व मोटर कार पर 5% ह्रास लगायें। दिनेश ने बताया कि वह माल का विक्रय लागत पर जमा 40 प्रतिशत पर किया करता है। देनदारों पर 5% का प्रावधान किया गया।

दिसंबर 2006 को उसका व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता और तुलन-पत्र बनायें।

हल

दिनेश की पुस्तकें

वर्षान्त 31 दिसंबर 2006 के लिये व्यापारिक और लाभ व हानि खाता

नाम **जमा**

व्यय/हानि		*राशि रु.*	*आगम/अधिलाभ*		*राशि (रु.)*
आरंभिक स्टॉक		25,000	विक्रय	89,800	
क्रय	69,000		*घटाया:* विक्रय वापसी	3,000	86,000
घटाया: क्रय वापसी	(2,000)	67,900	अंतिम स्टॉक		30,000
सकल लाभ आ/ले		24,800			
		1,16,800			1,16,800

© NCERT not to be republished

देय बट्टा		1,400	सकल लाभ आ/ला	24,800
डूबत ऋण		1,800	प्राप्त बट्टा	1,000
व्ययों का भुगतान	6,000			
जोड़ा: बकाया व्यय	1,200	7,200		
किराये का भुगतान		2,500		
फर्नीचर पर ह्रास	1,500			
मोटर वेन पर ह्रास	800	2,300		
संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान		2,430		
निवल लाभ (पूँजी खाते में हस्तांतरित)		8,170		
		25,800		25,800

31 दिसम्बर 2006 को तुलन-पत्र

दायित्व		*राशि (रु.)*	*परिसंपत्तियाँ*		*राशि (रु.)*
बकाया व्यय		1,200	रोकड़		8,000
लेनदार		27,000	देनदार	48,600	
पूँजी	81,500		*घटाया:* प्रावधान	(2,430)	46,170
घटाया: आहरण	5,000		अंतिम स्टॉक		30,000
	76,500		फर्नीचर एवं फीक्सचर	15,000	
जोड़ा: निवल लाभ	8,170	84,670	*घटाया:* ह्रास	(1,500)	13,500
			मोटर वेन	16,000	
			घटाया: ह्रास	(800)	15,200
		1,12,870			1,12,870

काम बही टिप्पणी:

(क) कुल देनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि*
	शेष आ/ला		45,000		रोकड़ प्राप्ति		80,000
	विक्रय		89,800		बट्टा प्रदत्त		1,400
					डूबत ऋण		1,800
					विक्रय वापसी		3,000
					अंतिम शेष		48,600
			1,34,800				1,34,800

© NCERT not to be republished

(ख) कुल लेनदार खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	नकद भुगतान		63,000		आरंभिक शेष		24,000
	बट्टा प्राप्त		1,000		क्रय		69,000
	क्रय वापसी		2,000				
	शेष आ/ले		27,000				
			93,000				93,000

(ग) रोकड़ पुस्तक सारांश

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि
	शेष आ/ला		4,500		लेनदार		63,000
	देनदार		80,000		व्यय का भुगतान		6,000
					आहरण		5,000
					किराये का भुगतान		2,500
					अंतिम शेष		8,000
			84,500				84,500

(घ) 31 दिसंबर 2005 को अवस्था विवरण

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियां	राशि (रु.)
लेनदार	24,000	देनदार	45,000
आरंभ में पूँजी	81,500	नकद	4,500
(शेष राशि)		स्टॉक	25,000
		फर्नीचर व फिक्सचर	15,000
		मोटर वैन	16,000
	1,05,500		1,05,500

© NCERT not to be republished

(ङ) अंतिम स्टॉक की गणना

कुल विक्रय	89,800
घटाया: विक्रय वापसी	(3,000)
निवल विक्रय	86,800
कुल क्रय	69,000
घटाया: क्रय वापसी	(2,000)
निवल क्रय	67,000
लागत पर निवल लाभ	40%
माना विक्रय किये गये माल की लागत	100 रु.
सकल लाभ	40 रु.
बेचे गये माल की लागत	140 रु.

विक्रय = 86,800 रु. = 100 /140 x 86,800 रु. = 62,000 रु.

निवल क्रय	67,000
जोड़ा: अंतिम रहतिया	25,000
विक्रय के लिये उपलब्ध माल की लागत	92,000
घटाया: विक्रय किये गये माल की लागत	(62,000)
अंतिम स्टॉक	30,000

अध्याय में प्रयुक्त शब्द

- अपूर्ण प्रलेख
- अवस्था विवरण

अधिगम उद्देश्य के संदर्भ में सारांश

1. *अपूर्ण प्रलेख:* द्विप्रविष्टि प्रणाली के अनुसार अपूर्ण प्रलेखों को तात्पर्य लेखांकन प्रलेखों के आभाव से होता है। प्रलेखों में अपूर्णता का स्तर उच्च स्तर यह असंगठित प्रलेखों से परिसम्पत्ति अभिलेख, जो कि स्वयं अपूर्ण है में अंतर पर निर्भर करता है।
2. *अवस्था विवरण व तुलन-पत्र में अंतर:* अवस्था विवरण वह विवरण है जिसमें एक फर्म की विभिन्न परिसंपत्तियों एवं दायित्वों को एक तिथि विशेष को दोनों पक्षों के अंतर जिसमें स्वामित्व का उल्लेख हो, का विस्तृत उल्लेख होता है। चूंकि प्रलेख अपूर्ण होते हैं। अत: परिसंपत्तियों एवं दायित्व सामान्यत: अनुमानित उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित होते हैं। इन्हें समुचित रूप से बनाए गए खाता वहियों के शेषों से नहीं लिया जाता है। जैसा कि तुलन-पत्र के मामले में होता है। तुलन-पत्र को द्विअंकीय प्रणाली के आधार पर तैयार किये गए खातों से बनाया जाता है।
3. *अपूर्ण प्रलेखों से लाभ व हानि की गणना*: फर्में अवस्था विवरण का प्रयोग उस दशा में पूँजी की गणना करने के लिए किया जाता है जब फर्म द्वारा प्रलेख उच्च स्तर पर अव्यवस्थित रूप से रखे जाते हैं। प्रारंभिक एक अंतिम पूँजी के अंतर ये आहरण को जोड़कर तथा वर्ष के दौरान लग गई अतिरिक्त पूँजी को घटा दिया जाता है। इस प्रकार से अवधि में लाभ व हानि की गणना की जाती है।

© NCERT not to be republished

4. *लाभ* व *हानि खाता और तुलन–पत्र बनाना:* जब ग्राहकों तथा लेनदारों के व्यक्तिगत खातों के बारे में सूचनाएं रोकड़ सारांश के साथ उपलब्ध है, और लाभ वं हानि खाता तथा तुलन–पत्र बनाने का प्रयास किया जा रहा है तो क्रय विक्रय देनदारों, लेनदारों के बारे में अनुपलब्ध सूचनायें देनदार खाता, लेनदार खाता प्राप्त विपत्र खाता, देय विपत्र खाता द्वारा द्विप्रविष्टि प्रणाली के तर्कों का प्रयोग करके उनके प्रारूप को बनाकर प्राप्त किया जा सकता है। एक बार जब लाभ एवं हानि खाता तथा तुलन–पत्र बना लिया जाता है। तो यह संभव होगा कि भविष्य में पूर्ण लेखांकन प्रणाली का प्रयोग करना प्रारंभ कर दे।

अभ्यास के लिए प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. अपूर्ण खातों का अर्थ समझाइये।
2. अपूर्ण खाते रखने के कारणों का उल्लेख कीजिए।
3. अवस्था विवरण तथा तुलन–पत्र के अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. एक व्यापारी द्वारा अपूर्ण खाते प्रलेख रखने में आनेवाली व्यावहारिक कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. अवस्था विवरण से क्या आशय है। अवस्था विवरण की सहायता से एक व्यापारी द्वारा अर्जित लाभ या हानि का निर्धारण किस प्रकार करेंगे।
2. क्या किसी व्यापारी द्वारा रखे गए अपूर्ण खातों से लाभ–हानि खाता व तुलन–पत्र बनाना संभव है। इससे सहमत है। व्याख्या कीजिए।
3. अपूर्ण खातों से निम्न का निर्धारण किस प्रकार करेंगे:
   अ. आरम्भिक पूँजी व अंतिम पूंजी
   ब. उधार विक्रय व उधार क्रय
   स. लेनदारों को भुगतान व देनदारों से प्राप्तियाँ
   द. रोकड़ का अंतिम शेष

संख्यात्मक प्रश्न

अवस्था विवरण विधि द्वारा लाभ व हानि का निर्धारण

1. नीचे दी गई सूचनाओं से लाभ व हानि विवरण बनाइये।

	रुपये
वर्ष के अन्त में पूँजी	5,00,000
वर्ष के आरंभ में पूँजी	7,50,000
सत्र के दौरान आहरण	3,75,000
अतिरिक्त पूँजी का समावेश	50,000

(*उत्तर:* लाभ 75,000 रुपये)

© NCERT not to be republished

2. श्री मनवीर ने 01 जनवरी 2005 को 4,50,000 रुपये की पूँजी से व्यापार प्रारंभ किया। 31 दिसंबर 2005 को उनकी स्थिति निम्न है:

रोकड़	रुपये
प्राप्य विपत्र	99,000
संयंत्र	75,000
भूमि व भवन	1,80,000
फर्नीचर	50,000

इस तिथि को मनवीर ने आपने मित्र से 45,000 रुपये उधार लिये। घरेलू व्यय के लिये 8,000 रुपये प्रति मास निकाले। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त वर्ष के लिये लाभ व हानि की निर्धारण करें।

(*उत्तर:* लाभ 53,000 रुपये)

3. नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर वर्ष का लाभ निर्धारण करें:

वर्ष के आरंभ में पूँजी	70,000
वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगायी	17,500
स्टॉक	59,500
विविध देनदार	25,900
व्यपारिक परिसर	8,600
मशीनरी	2,100
विविध लेनदार	33,400
वर्ष के दौरान आहरण	26,400

(*उत्तर:* लाभ 1,600 रूपये)

4. निम्न सूचनाओं से आरंभिक पूँजी की गणना करें।

वर्ष के अंत में पूँजी	4,00,000
वर्ष के दौरान आहरण	60,000
वर्ष के दौरान नई पूँजी लगायी	1,00,000
चालू वर्ष का लाभ	80,000

(*उत्तर:* वर्ष के आरंभ में पूँजी 2,60,000 रु. रुपये)

5. नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर अंतिम पूँजी अंतिम पूँजी की गणना करें:

	01 जनवरी 2005	31 दिसंबर 2006
लेनदार	5,000	30,000
देय विपत्र	10,000	-
ऋण	–	50,000
प्राप्य विपत्र	30,000	50,000
स्टॉल	5,000	30,000
रोकड़	2,000	20,000

(*उत्तर:* अंतिम पूँजी 20,000 रु.)

© NCERT not to be republished

6. श्रीमती अनु ने जुलाई 2005 को 4,00,000 रुपये की पूँजी से व्यापार आरंभ किया। आपने मित्र से 1,00,000 रु. का ऋण 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से (ब्याज का भुगतान हुआ) व्यापार के लिये लिया और 75,000 रु. की अतिरिक्त पूँजी लगाई। 31 दिसंबर 2005 की स्थिति इस प्रकार है:

	रुपये
रोकड़	3,00,000
स्टॉक	4,70,000
देनदार	3,50,000
लेनदार	3,00,000

वर्ष में हर मास 8,000 का आहरण किया वर्ष के लिये लाभ व हानि की गणना करें और कार्य वही को स्पष्ट दिखायें।

(*उत्तर:* लाभ 23,000 रुपये)

7. श्री अरनव ने अपने व्यवसाय के उचित प्रलेखे नहीं रखे। उपलब्ध निम्न सूचनाओं से वर्ष में लाभ व हानि का विवरण तैयार करें:

	रुपये
वर्ष के आरम्भ में स्वामी की समता	15,00,000
प्राप्य विपत्र	60,000
हस्तस्थ रोकड़	80,000
फर्नीचर	9,00,000
भवन	10,00,000
लेनदार	6,00,000
व्यापारिक स्टॉक	20,00,00
अतिरिक्त पूँजी लगाई	3,20,000
वर्ष के दौरान आहरण	80,000

(*उत्तर:* हानि 1,00,000 रुपये)

वर्ष के आरम्भ व अन्त में अवस्था विवरण का निर्धारण एवं लाभ व हानि की गणना

8. श्री अकशत जो अपनी पुस्तकों को एकल प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार रखता है, निम्न सूचनाऐं दी गई हैं:

	01 अप्रैल 2004	31 मार्च 2005
हस्तस्थ रोकड़	1,000	1,500
बैंक में रोकड़	15,000	10,000
स्टॉक	1,00,000	95,000
देनदार	42,500	70,000
व्यापारिक परिसर	75,000	1,35,000
फर्नीचर	9,000	7,500
लेनदार	66,000	87,000
देय विपत्र	44,000	58,000

© NCERT not to be republished

वह वर्ष के दौरान 45,000 रूपये का आहरण किया एवं 25,000 रु. अतिरिक्त पूँजी लगाई। व्यापार के लाभ व हानि की गणना करें।

(उत्तर: लाभ 61,500 रुपये)

9. गोपाल नियमित रूप से लेखा पुस्तकों को नहीं रखता। निम्न सूचनाएं दी गई हैं:

	01 जनवरी 2005	31 दिसंबर 2005
	रुपये	रुपये
हस्तस्थ रोकड़	18,000	12,000
बैंक में रोकड़	1,500	2,000
व्यापारिक स्टॉक	80,000	90,000
विविध लेनदार	36,000	60,000
विविध लेनदार	60,000	40,000
ऋण	10,000	8,000
कार्यालय उपकरण	25,000	30,000
भूमि व भवन	30,000	20,000
फर्नीचर	10,000	10,000

वर्ष के दौरान 20,000 रुपये लाभ एवं 12,000 रुपये का व्यापार से आहरण किया। दी गई सूचनाओं के आधार पर लाभ व हानि का विवरण बनाइये।

(उत्तर: लाभ 53,500 रुपये)

10. श्री मुनीश अपूर्ण लेखों से अपनी लेखा पुस्तके रखते है उनकी पुस्तके निम्न सूचनाएं देती है:

	01 जनवरी 2005	31 दिसंबर 2005
	रुपये	रुपये
रोकड़	1,200	1,600
प्राप्य विपत्र	-	2,400
देनदार	16,800	27,200
स्टॉक	22,400	24,400
विनियोग	-	8,000
फर्नीचर	7,500	8,000
लेनदार	14,000	15,200

वह अपने निजी व्यय के लिये 300 रुपये प्रति माह का आहरण करते हैं। वह अपने विनियोग 16,000 रुपये को 2 प्रतिशत अधिलाभ पर विक्रय करके राशि व्यापार में लगाते हैं।

(उत्तर: लाभ 9,780 रु.)

11. श्री गिरधारी लाल जी पूर्ण लेखांकन प्रणाली का पालन नहीं करते हैं 1 जनवरी 2000 को उनके शेष इस प्रकार हैं:

© NCERT not to be republished

दायित्व	राशि (रुपये)	परिसम्पतियाँ	राशि (रुपये)
विविध लेनदार	35000	हस्तस्थ रोकड़	5,000
देय विपत्र	15,000	बैंक में रोकड़	20,000
पूँजी	40,000	विविध देनदार	18,000
		स्टॉक	22,000
		फर्नीचर	8,000
		संयन्त्र	17,000
	90,000		90,000

वर्ष के अन्त में उनकी स्थिति:

	रुपये
हस्तस्थ रोकड़	7,000
स्टॉक	8,600
देनदार	23,800
फर्नीचर	15,000
संयन्त्र	20,350
देय विपत्र	20,200
लेनदार	15,000

वह 500 रुपये प्रति माह का आहरण करते हैं। इसमें से 1,500 रुपये व्यापार के लिये व्यय करते हैं। लाभ व हानि का विवरण बनाइये।

(*उत्तर:* लाभ 4,050 रुपये)

12. श्री अशोक अपनी पुस्तकें नियमित रूप से नहीं रखते हैं। उनकी पुस्तकों से निम्न सूचनाएँ उपलब्ध हैं:

	01 जनवरी 2005 रुपये	31 दिसंबर 2005 रुपये
विविध लेनदार	45,000	93,000
पत्नी से ऋण	66,000	57,000
विविध देनदार	22,500	-
भूमि व भवन	89,600	90,000
हस्तस्थ रोकड़	7,500	8,700
बैंक अधिविकर्ष	25,000	-
फर्नीचर	1,300	1,300
रहतिया	34,000	25,000

वर्ष के दौरान श्री अशोक ने अपनी निजी कार 50,000 रुपये में विक्रय करके राशि व्यापार में विनियोग कर दी, 31 जुलाई 2005 तक व्यापार से 1,500 रुपये प्रति मास आहरण किया एवं उसके बाद 4,500 रुपये प्रति माह का आहरण किया। आप 31 दिसंबर 2005 को लाभ व हानि एवं विवरण तैयार करें।

(*उत्तर:* हानि 57,900 रुपये)

© NCERT not to be republished

13. कृष्णा कुलकर्णी अपनी पुस्तकें नियमित रूप से नहीं रखते हैं 31 दिसंबर 2005 को निम्न सूचनाओं के आधार पर लाभ व हानि का विवरण बनाइये:

	01 जनवरी 2005 (रुपये)	31 दिसम्बर 2005 (रुपये)
हस्तस्थ रोकड़	10,000	36,000
देनदार	20,000	80,000
लेनदार	10.000	46.000
प्राप्य विपत्र	10,000	24,000
देय विपत्र	4,000	42,000
कार	-	80,000
स्टॉक	40,000	30,000
फर्नीचर	8,000	48,000
विनियोग	40,000	50,000
बैंक शेष	1,00,000	90,000

निम्न समायोजन करें:

(अ) कृष्णा ने निजी उपयोग के लिये 5,000 प्रति मास का आहरण किया।
(व) कार पर 5% की दर और एक फर्नीचर पर 10% दर से ह्रास लगाये।
(स) बकाया किराया 6,000 रुपये।
(द) वर्ष के दौरान 30,000 रुपये नई पूँजी लगाई।

(*उत्तर:* लाभ 1,41,200 रुपये, अवस्था विवरण समायोजन के साथ 4,29,200 रुपये)

14. मैसर्स सानया स्पोर्टस इक्युपमेंटस नियमित प्रलेख नहीं रखता। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये, निम्न सूचनओं के आधार पर लाभ व हानि एवं तुलन-पत्र तैयार करें:

	31 दिसंबर 2004 रुपये	31 दिसंबर 2005 रुपये
हस्तस्थ रोकड़	6,000	24,000
बैंक अधिविकर्ष	30,000	-
स्टॉक	50,000	80,000
विविध लेनदार	26,000	40,000
विविध देनदार	60,000	1,40,000
देय विपत्र	6,000	12,000
फर्नीचर	40,000	60,000
प्राप्य विपत्र	8,000	28,000
मशीनरी	50,000	1,00,000
विनियोग	30,000	80,000

निजी उपयोग के लिये 10,000 रुपये प्रति माह का आहरण। वर्ष का दौरान 2,00,000 रु. की नई पूँजी का विनियोग। डूबत ऋण 2,000 रुपये एवं देनदार पर 5% का प्रावधान करें, अदत्त वेतन 2,400 रुपये, पूर्वदत्त बीमा 700 रुपये, फर्नीचर एवं मशीन पर 10% प्रति वर्ष की दर से ह्रास लगायें।

(*उत्तर:* लाभ 1,71,300 रुपये अवस्था विवरण समायोजन सहित 4,87,700 रुपये)

© NCERT not to be republished

लुप्त राशि का निर्धारण:

15. निम्नलिखित सूचनाओं से लेनदार की राशि की गणना करें:

	रुपये
31 मार्च 2005 को विविध लेनदार	1,80,425
प्राप्त बट्टा	26,000
बट्टा दिया	24,000
क्रय वापसी	37,200
विक्रय वापसी	32,200
स्वीकृत विपत्र	1,99,000
विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण	26,000
01 अप्रैल 2006 को लेनदार	2,09,050
कुल क्रय	8,97,000
नकद क्रय	1,40,000

(उत्तर: लेनदारों को रोकड़ का भुगतान, 4,40,175 रुपये)

16. निम्न से उधार क्रय ज्ञात करें।

नकद क्रय	1,40,000
01 अप्रैल 2004 को लेनदारों का शेष	45,000
31 मार्च 2005 को लेनदारों का शेष	36,000
लेनदारों को रोकड़ भुगतान	1,80,000
लेनदारों का चेक से भुगतान	60,000
रोकड़ क्रय	75,000
लेनदारों से प्राप्त बट्टा	5,400
बट्टा दिया	5,000
लेनदारों को देय विपत्र	12,750
क्रय वापसी	7,500
देय विपत्र (अनादृत)	3,000
प्राप्य विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण	4,500
लेनदारों को दिये गये प्राप्य विपत्र अनादृत	1,800
विक्रय वापसी	3,700

(उत्तर: उधार क्रय 2,56,350 रुपये)

17. निम्न सूचनाओं से कुल क्रय की गणना करें:

	रुपये
01 जनवरी 2005 को लेनदार	30,000
31 दिसंबर 2005 को लेनदार	20,000
देय विपत्र का आरंभिक शेष	25,000
देय विपत्र का अंतिम शेष	35,000

© NCERT not to be republished

लेनदारों को रोकड़ भुगतान	1,51,000
विपत्र का भुगतान	44,500
नकद (रोकड़) क्रय	1,29,000
क्रय वापसी	6,000

(*उत्तर:* कुल क्रय 3,30,500 रुपये)

18. निम्न सूचनाएं दी गई हैं:

	रुपये
आरंभिक लेनदार	60,000
लेनदारों को रोकड़ भुगतान	30,000
अंतिम लेनदार	36,000
विक्रय वापसी	13,000
परिपक्य विपत्र	27,000
विपत्र अनादृत	8,000
क्रय वापसी	12,000
बट्टा दिया	5,000

वर्ष के दौरान उधार क्रय की गणना करें।

(*उत्तर:* उधार क्रय 37,000 रुपये)

19. निम्न में से वर्ष के दौरान स्वीकृत विपत्र की राशि की गणना करें:-

01 अप्रैल 2005 को देय विपत्र	1,80,000
31 मार्च 2006 को देय विपत्र	2,20,000
वर्ष के दौरान अनादृत देय विपत्र	28,000
वर्ष के दौरान परिपक्व देय विपत्र	50,000

(*उत्तर:* विपत्र स्वीकृत 1,18,000 रुपये)

20. नीचे दी गई सूचनाओं से वर्ष के दौरान परिपक्व विपत्र की राशि ज्ञात करें:

देय विपत्र अनादृत	37,000
देय विपत्र का अंतिम शेष	85,000
देय विपत्र का आरंभिक शेष	70,000
स्वीकृत देय विपत्र	90,000
चेक अनादृत	23,000

(*उत्तर:* परिपक्व विपत्र 38,000 रुपये)

21. निम्न से देय खाते बनायें एवं अज्ञात संख्या को ज्ञात करें:

स्वीकृत विपत्र	1,05,000
प्राप्त बट्टा	17,000
क्रय वापसी	9,000
विक्रय वापसी	12,000

© NCERT not to be republished

देय खातों को रोकड़ भुगतान	50,000
प्राप्य विपत्र का लेनदारों को हस्तांतरण	45,000
अनादृत विपत्र	17,000
डूबत ऋण	14,000
देय खातों का शेष (अंतिम)	85,000
उधार क्रय	2,15,000

(*उत्तर:* लेनदारों को अरंभिक शेष 79,000 रुपये)

22. वर्ष के दौरान प्राप्त बिल की राशि की गणना करें:

प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष	75,000
अनादृत विपत्र	25,000
प्राप्त विल (परिपक्व)	1,30,000
प्राप्य विपत्रों का लेनदारों को हस्तांतरण	15,000
प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष	65,000

(*उत्तर:* 1,60,000 रुपये)

23. निम्न सूचनाओं से अनादृत प्राप्य विपत्र की राशि को गणना करें:

प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष	1,20,000
प्राप्त विपत्रों (परिपक्व)	1,85,000
प्राप्य विपत्रों को हस्तांतरण	22,800
प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष	50,700
प्राप्त प्राप्य विपत्र	1,50,000

(*उत्तर:* 11,500 रूपये)

24. नीचे दिये गये विवरण से उधार विक्रय व कुल विक्रय ज्ञात करें:

	(रुपये)
आरंभिक देनदार	45,000
अंतिम देनदार	56,000
बट्टा दिया	2,500
विक्रय वापसी	8,500
अप्राप्य राशि	4,000
प्राप्त प्राप्य विपत्र	12,000
अनादृत प्राप्य विपत्र	3,000
अनादृत चैक	7,700
(नकद) रोकड़ विक्रय	80,000
देनदारों से प्राप्त रोकड़	2,30,000
देनदारों से प्राप्त चैक	25,000

(*उत्तर:* कुल विक्रय 3,62,300 रुपये)

© NCERT not to be republished

25. निम्न सूचनाओं से 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले में प्राप्य विपत्र खाता एवं कुल देनदार खाता बनायें:

	रुपये
लेनदारों को आरंभिक शेष	1,80,000
प्राप्य विपत्र का आरंभिक शेष	55,000
वर्ष के दौरान रोकड़ विक्रय	95,000
वर्ष के दौरान उधार विक्रय	14,50,000
विक्रय वापसी	78,000
देनदारों से प्राप्त रोकड़	10,25,000
देनदारों को बट्टा दिया	55,000
प्राप्य विपत्रों का लेनदारों को बेचान	60,000
प्राप्य रोकड़ (परिपक्व विपत्र)	80,500
अप्राप्य राशि	10,000
31 दिसंबर 2005 को प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष	75,500

(*उत्तर:* प्राप्त विपत्र 1,61,000, देनदारों का अंतिम शेष 3,01,000 रुपये)

26. संबंधित खाता बनाते हुये लुप्त राशि को ज्ञात करें।

देनदारों का आरंभिक शेष	14,00,000
प्राप्य विपत्रों का आरंभिक शेष	7,00,000
प्राप्य विपत्रों का अंतिम शेष	3,50,000
चैक अनादृत	27,000
लेनदारों से प्राप्त रोकड़	10,75,000
चैक प्राप्त करें एवं बैंक में जमा करें	8,25,000
बट्टा दिया	37,500
अप्राप्य राशि	17,500
विक्रय वापसी	28,000
ग्राहकों से प्राप्त प्राप्य विपत्र	1,05,000
परिपक्व प्राप्य विपत्र	2,80,000
छूट पर विपत्र	65,000
लेनदारों को विपत्र का हस्तातंरण	70,000

(*उत्तर:* उधार विक्रय 5,16,000 रुपये)

27. निम्न सूचनाओं से विविध देनदारों का आरंभिक शेष एवं विविध लेनदारों के अंतिम शेष का निर्धारण करें।

आरंभिक रहतिया	30,000
अंतिम रहतिया	25,000
आरंभिक लेनदार	50,000
अंतिम देनदार	75,000
लेनदारों से प्राप्त बट्टा	1,500
ग्राहकों को बट्टा दिया	2,500

© NCERT not to be republished

लेनदारों को रोकड़ भुगतान	1,35,000
वर्ष के दौरान स्वीकृत देय विपत्र	30,000
वर्ष के दौरान प्राप्त प्राप्य विपत्र	75,000
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्ति	2,20,000
आनदृत प्राप्य विपत्र	3,500
क्रय	2,95,000

विक्रय मूल्य पर सकल लाभ 25% एवं कुल विक्रय में से 85,000 रुपये नकद विक्रय है।

(*संकेत:* कुल विक्रय = 4,00,000 रु. = (3,00,000 रु. x 100/75)

(*उत्तर:* देनदारी का आरंभिक शेष 54,000 रूपये, लेनदारों का अंतिम शेष 1,78,500 रुपये)

28. श्रीमती भावना एकल प्रविष्टि प्रणाली से अपनी पुस्तकें रखती हैं। 31 दिसंबर 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये उनके व्यापार के अंतिम खाते तैयार करें। इस सत्र से रोकड़ प्राप्ति व रोकड़ भुगतान से सम्भावित प्रलेखे का विवरण निम्न है:–

रोकड़ पुस्तक सारांश

नाम **जमा**

प्राप्तियाँ	*राशि* रु.	*भुगतान*	*राशि* रु.
रोकड़ का आरंभिक शेष	12,000	लेनदारों को भुगतान	53,000
अतिरिक्त पूँजी	20,000	व्यापारिक व्यय	12,000
देनदारों से प्राप्तियाँ	1,20,000	मजदूरी का भुगतान	30,000
		आहरण	15,000
		31 दिसंबर 2005 को बैंक शेष	35,000
		हस्तस्थ रोकड़	7,000
	1,52,000		1,52,000

अन्य सूचनाएँ

	01 जनवरी 2005	31 दिसंबर 2005
देनदार	55,000	85,000
लेनदार	22,000	29,000
स्टॉक	35,000	70,000
सयंत्र	10,00,000	1,00,000
मशीनरी	50,000	50,000
भूमि व भवन	2,50,000	2,50,000
विनियोग	20,000	20,000

© NCERT not to be republished

समस्त विक्रय और क्रय उधार पर किये जाते हैं। सयंत्र और भवन पर ह्रास 10% से लगाएँ तथा मशीनरी पर ह्रास 5% से लगाएँ। संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान 5% की दर से लगाएँ।

[उत्तर: सकल लाभ 95,000 रु.; निवल लाभ 41,250 रु.; तुलन-पत्र का कुल योग 5,70,250 रु.]

स्वयं जाँचिये की जाँच सूची

1. स्वयं जाँचिये - I

1. (ख)
2. (घ)
3. (क)
4. (ख)

2. स्वयं जाँचिये - II

1. कुल देनदार
2. आरंभिक पूँजी, अंतिम पूँजी
3. अतिरिक्त पूँजी, आहरण
4. लघु व्यापारी

© NCERT not to be republished